

कोविड-19 का प्रिंट मीडिया के पत्रकारों पर प्रभाव  
(लखनऊ के विशेष संदर्भ में अध्ययन)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय  
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ

के

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग  
में

मास्टर ऑफ़ फ़िलॉसफ़ी

उपाधि हेतु

शोध सारांश

शोधार्थी

श्याम प्रताप सिंह यादव

पंजीकरण संख्या -020/18

शोध निर्देशक

डॉ० लोकनाथ



जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग  
मीडिया एवं संचार विद्यापीठ  
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय  
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)  
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ (उ.प्र.)  
वर्ष -2022

## शोध-सारांश

---

प्रस्तुत शोध में भारतीय प्रिंट मीडिया और पत्रकार के कोरोना महामारी के संदर्भ में से पैदा हालात का विस्तृत रूप में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इसके साथ उन चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है, जिसका सामना प्रिंट पत्रकारों और प्रिंट मीडिया संस्थानों को करना पड़ा है। प्रस्तुत शोध में इस विषय की महत्ता पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है, संक्रमण के खतरों, नौकरी बचाने की चुनौती, फेक न्यूज और इनफोडैमिक के बीच सूचना के लिए प्रिंट पत्रकारों को किन चुनौतियों से जूझना पड़ा है। जिसके अंतर्गत प्रथम अध्याय 'कोरोना वायरस का परिचयात्मक संदर्भ' में यह विश्लेषित किया गया है, कोरोना वायरस की शुरुआत कहां से हुई है, यह वायरस किस प्रकार फैलता है। किस प्रकार इस महामारी ने पूरी दुनिया में लाकडाउन की स्थिति खड़ी कर दी, जिससे पूरी दुनिया थम सी गई, इसके अलावा वायरस के आए विभिन्न रूपों ने किस प्रकार संपूर्ण विश्व के लिए और स्वास्थ्य और दुनिया की तमाम सरकारों के लिए असमंजस की स्थिति ला खड़ी कर दी, जिसके कारण तमाम विश्व की सरकारों ने कानून के माध्यम से पत्रकारों से लेकर तमाम सूचना और व्यवस्था को नियंत्रित करने की कोशिश की। भारत में भी सरकार के पास कई संवैधानिक अधिकार प्राप्त थे, "जिसमें में 'महामारी रोग अधिनियम(1897)', के तहत केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को यह अधिकार प्राप्त है, कि वे अपनी राज्य सीमा से प्रवेश संबंधित क्वाराइंटन का नियम बना सकती है। इसके अलावा अन्य कानून में 'आवश्यकता वस्तु विनिमय(1955)'के तहत केंद्र सरकार ने 30 जून 2020 को सैनिटाईजर और मास्क को आवश्यक वस्तु विनिमय में रख दिया, इसके अलावा भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम (2005) कानून को विश्लेषित किया गया। जिसके अंतर्गत यह बताया गया है कि कोविड मामलों को ट्रैक करने के लिए एवं सार्वजनिक सुरक्षा के हित के लिए उपयोगकर्ता का डाटा लिया जा सकता है। इसके अलावा कोविड महामारी के दौरान पहली और दूसरी लहर को व्याख्यित किया है, किस प्रकार दूसरी लहर भारत की संपूर्ण स्वास्थ्य व्यवस्था पर सवालिया निशान खड़े कर दिए। दूसरी लहर में कोरोना के एक नए वेरियंट डेल्टा का विश्लेषित किया है, जिसके कारण भारत में महामारी से सबसे अधिक मृत्यु हुई है। डेल्टा के अलावा और नए वेरियंट ओमिक्रान, म्यू, अल्फा, बीटा, गामा को भी विश्लेषित किया है। कोविड महामारी के दौरान सरकारों और कई एजेंसियों ने एक ऐप्स को विकसित किया, जिसने महामारी से संबंधित सूचनाएं एवं जानकारी लोगों तक आसानी से पहुंच सके, इसका इस शोध में वर्णन किया गया

है। अगले अध्याय कोविड-19 एवं प्रिंट मीडिया के संबंध और चुनौती की व्याख्या की गई है। जिसके तहत इन सवालों की उत्तर तलाशने की कोशिश की गई है, कि कोरोना वायरस से उपजी महामारी ने पत्रकारों की नौकरी, स्वास्थ्य, रिपोर्टिंग के लिए किस प्रकार की चुनौती दी है। इसके अलावा मीडिया संस्थानों ने किस प्रकार महामारी को आधार बनाकर पत्रकारों को नौकरी से निकाला है, उनके वेतन को कम किया है। पत्रकारों के आर्थिक एवं राजनीतिक दबावों की चर्चा की गई है। इस शोध में इन प्रश्नों के उत्तर तलाशने की कोशिश की गई है, किस प्रकार कोरोना महामारी ने समाचार पत्र उद्योग के लिए एक मंदी का दौर लेकर आया और इससे समाचार पत्र उद्योग ने कैसे सुनियोजित तरीके से निपटा इसका विस्तृत विश्लेषण किया गया है। इसके इतर सोशल मीडिया ने पत्रकारों की विश्वसनीयता को कैसे खतरे में डाल दिया है, इसकी विवेचना की गई है। महामारी के दौरान आई अत्यधिक सूचनाएं एवं उन पर किस प्रकार फिल्टर न होना और उसका तेजी से प्रसारित होने एक अलग प्रकार का संक्रमण है, सोशल मीडिया पर प्रसारित खबर को कोई पत्रकार ज्यादा देर रोक नहीं सकता है, कई सूचनाओं और वीडियो इतने तेजी से फैले कि कई देश तक प्रसारित हो गए, जो असत्य थे, या फेक वीडियो थे। इनका विश्लेषण इस अध्याय में किया गया है। अगले अध्याय में सर्वेक्षण पद्धति के माध्यम से उन सवालों के उत्तर जानने का प्रयास किया है, जिनके कारण पत्रकारों के कार्य की रूप रेखा बदल गई है। शोध के अंतिम अध्याय आंकड़ों से प्राप्त हुए उत्तर को निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

## अध्ययन की समस्या

इस शोध के अंतर्गत कोरोना वायरस के कारण उपजी महामारी से पत्रकारों के दैनिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। जिसका पूर्ववर्ती शोध में वर्णन नहीं किया गया है। पूर्व के शोध में प्रिंट मीडिया एवं पत्रकारों का जिक्र किया गया है, लेकिन उनकी दैनिक समस्याओं जैसे कि कोरोना महामारी के दौरान पत्रकारों को मीडिया संस्थान ने क्या मदद की और रिपोर्टिंग और सूचना संग्रहण के दौरान उनको किन मुश्किल और चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, इसका अध्ययन नहीं किया गया है। प्रस्तुत शोध के अंतर्गत पत्रकारों को कोरोना से आई चुनौतियों और जीवन में आई विसंगतियों को शोध के अंतर्गत समस्या के रूप में चिन्हित किया गया है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से इन प्रश्नों और समस्याओं का उत्तर देने का प्रयास किया गया है।

## शोध के उद्देश्य

- कोविड-19 के दौरान प्रिंट मीडिया पत्रकारों की कार्यप्रणाली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- कोविड-19 के दौरान प्रिंट मीडिया पत्रकारों की जीवन से जुड़ी असुरक्षा और विसंगतियों का अध्ययन करना ।
- महामारी के इस दौर में पत्रकारों द्वारा अपने जीवन और आजीविका के बीच संतुलन को ज्ञात करना ।
- कोविड से संक्रमित प्रिंट मीडिया पत्रकारों के प्रति संस्थान द्वारा सहायता का विश्लेषण करना।

### 1.5) शोध प्रश्न

- 1 कोविड-19 ने प्रिंट मीडिया पत्रकारों की कार्य प्रणाली को किस प्रकार प्रभावित किया है?
- 2 कोविड-19 के कारण प्रिंट मीडिया पत्रकारों के जीवन में किस प्रकार असुरक्षा की भावना आई है?
3. महामारी के इस दौर में पत्रकारों ने अपने जीवन और आजीविका के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित किया ?
4. कोविड-19 से संक्रमित पत्रकारों के इलाज के लिए मीडिया ने संस्थान ने किस प्रकार सहायता उपलब्ध करायी है?

### 1.6) शोध का महत्व

1. इस शोध के माध्यम से प्रिंट मीडिया पत्रकारों के जीवन संघर्ष और बलिदान से जनमानस को अवगत कराना।
- 2 यह शोध सरकार को प्रिंट मीडिया पत्रकारों के लिए कई हितकर एवं कल्याणकारी योजना बनाने में सहायक होगा।
3. इस अध्ययन के माध्यम प्रिंट मीडिया पत्रकारों के प्रति संस्थान एवं समाज को संवेदनशील बनाने में मदद करना।

4. यह शोध कार्य प्रिंट मीडिया पत्रकारों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने में सहायक होगा।

### **1.7) शोध अभिकल्प**

इस लघु-शोध कार्य में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प का उपयोग किया है। इस शोध के अंतर्गत कोविड के पत्रकारों का प्रभाव जाने के लिए विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

### **1.8) शोध प्रविधि**

प्रस्तुत शोध में कोविड महामारी का प्रिंट पत्रकारों पर प्रभाव जानने का प्रयास किया गया है, जिसके लिए सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। जिससे पत्रकारों के कोविड पर विचारों, प्रभाव एवं मत का आकलन किया जा सके।

### **1.9) शोध पद्धति**

प्रस्तुत शोध में अ-संभाव्यता निदर्शन पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत उद्देश्यात्मक निदर्शन पद्धति अपनाई गई है।

#### **1.9.1) अध्ययन की इकाई**

शोध की इकाई के रूप में कोविड-19 के दौरान लखनऊ के सबसे ज्यादा प्रसारित होने वाले हिंदी के समाचार पत्रों में कार्यरत 100 पत्रकारों का चयन किया गया है।

#### **1.9.2) अध्ययन का समग्र**

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ इस अध्ययन का क्षेत्र है, जिसके अंतर्गत लखनऊ के प्रमुख दैनिक हिंदी राष्ट्रीय समाचार पत्रों का चयन किया गया है। जिनमें सर्वाधिक प्रसारित दैनिक हिंदी के चार

प्रमुख समाचार पत्र दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स को शामिल किया गया है।

### 1.9.3) अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक सूचना के लिए प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है, जिसमें उत्तरदाताओं से कोविड का प्रभाव और मीडिया संस्थानों की मदद संबंधी प्रश्न पूछे गए हैं।

### 1.9.4) तथ्यों का संकलन

प्राथमिक स्रोत – इस शोध के अंतर्गत तथ्यों के संकलन के प्राथमिक स्रोत के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

द्वितीयक स्रोत – तथ्यों के संकलन के द्वितीयक स्रोत के लिए सार्वजनिक स्रोत का उपयोग किया गया है, जिनमें लेख, पुस्तकें, मीडिया रिपोर्ट, पत्रिकाओं को शामिल किया गया है।

### आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण

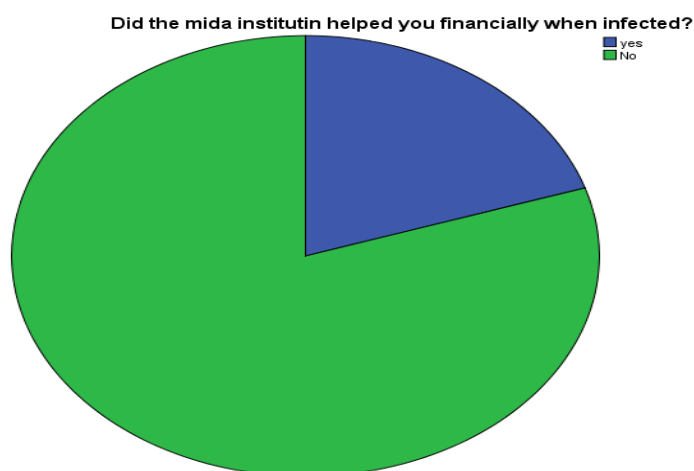
तृतीय अध्याय में कोरोना महामारीकाप्रिंट पत्रकारों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया था। इस अध्याय में प्रिंट पत्रकारों पर कोरोना के प्रभाव को विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इस शोध पत्रकारों पर कोरोना महामारी का प्रभाव जानने के लिए सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसके लिए शोध उपकरण के रूप में प्रश्नावली का प्रयोग किया है। जिसमें लखनऊ के 100 प्रिंट पत्रकारों का चयन किया गया है।

प्रस्तुत अध्याय में प्रिंट पत्रकारों पर कोरोना वायरस के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। जिसके तहत लखनऊ के सर्वाधिक प्रसारित राष्ट्रीय समाचार-पत्रों (दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स) का चयन किया गया है तथा उद्देश्यपरक निर्देशन पद्धति के माध्यम से प्रत्येक समाचार-पत्र से 25-25 पत्रकारों को उत्तरदाता के रूप में चयनित किया गया है। जिनमें फोटो जर्नलिस्ट, रिपोर्टर, स्ट्रिंगर, संपादक, उप संपादक सभी शामिल हैं।

➤ क्या संक्रमित होने पर मीडिया संस्थान ने आपको आर्थिक सहयोग किया ?

Did the media institution helped you financially when infected?

	Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
yes	20	20.0	20.0	20.0
Valid No	80	80.0	80.0	100.0
Total	100	100.0	100.0	

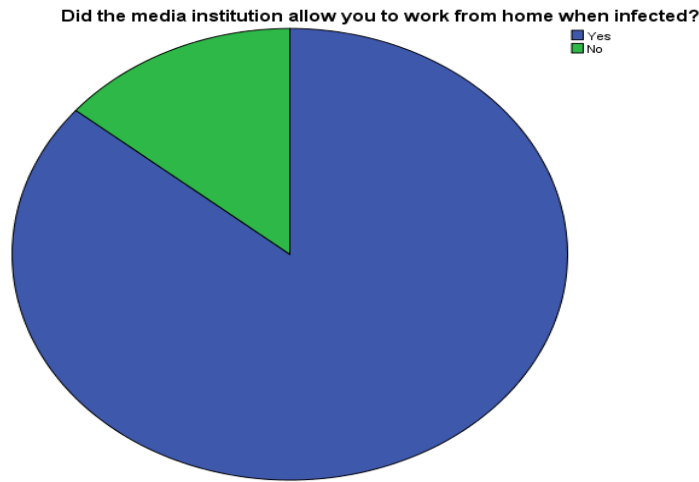


महामारी के समय जब दुनिया को एक होना चाहिए था, तब असमानता, असहयोग की खाँई और बढ़ गई, जिसके उत्तर इस प्रश्न में भी मिलता है। कोविड संक्रमित होने पर सहयोग की जरूरत थी लेकिन मीडिया संस्थानों ने सहयोग के इंकार के लिए अपने हाथ खड़े कर दिए ,जिसके तहत संक्रमित होने पर मीडिया संस्थान के सहयोग के मामले में 20 फीसदी उत्तरदाता में हां में उत्तर दिया है, जबकि 80 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया है। इनका मानना है कि इनको किसी प्रकार के आर्थिक सहयोग की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं कराई गई है।

➤ क्या संक्रमित होने पर आपको मीडिय संस्थान ने वर्क फार्म होम की अनुमित दी ?

**Did the media institution allow you to work from home when infected?**

	Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Yes	86	86.0	86.0	86.0
Valid No	14	14.0	14.0	100.0
Total	100	100.0	100.0	



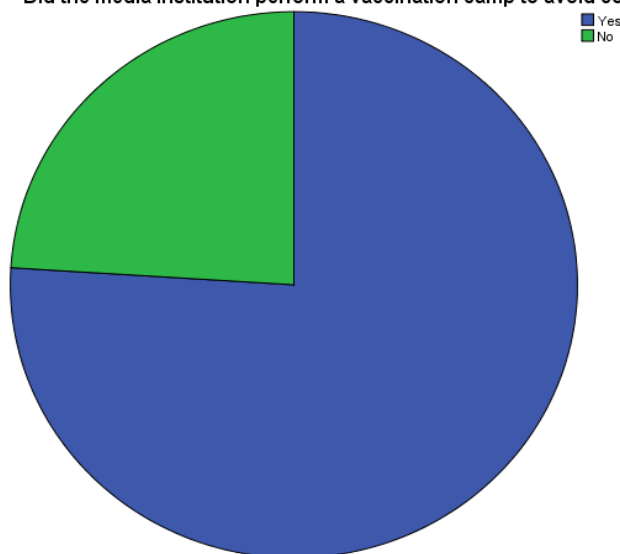
कोविड संक्रमण के खतरे के अंदेशे को देखते हुए सभी मीडिया संस्थान ने पत्रकारों को वर्कफार्म करने के लिए जिससे संस्थान की इमेज पर किसी तरह का प्रशासनिक दबाव न आए, एक तो सरकारों स्वयं गाइडलाइन जारी कर रखी थी कि 50 फीसदी ज्यादा स्टाफ न बुलाए। इसका असर इस उत्तर में भी दिखता है, जहां 86 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है कि उन्हें वर्कफार्म के अनुमति दी गई, जबकि केवल 14 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया है। संक्रमित होने पर पत्रकारों को दफ्तर बुलाना बेहद जोखिम भरा कार्य था, मीडिया संस्थानों ने संक्रमित पत्रकारों को वर्कफार्म होम देना ही उचित समझा।

➤ क्या कोविड संक्रमण से बचने के लिए मीडिया संस्थान ने वैक्सीनेशन कैंप लगवाया ?

**Did the media institution perform a vaccination camp to avoid covid infection?**

	Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Yes	76	76.0	76.0	76.0
Valid No	24	24.0	24.0	100.0
Total	100	100.0	100.0	

Did the media institution perform a vaccination camp to avoid covid infection?

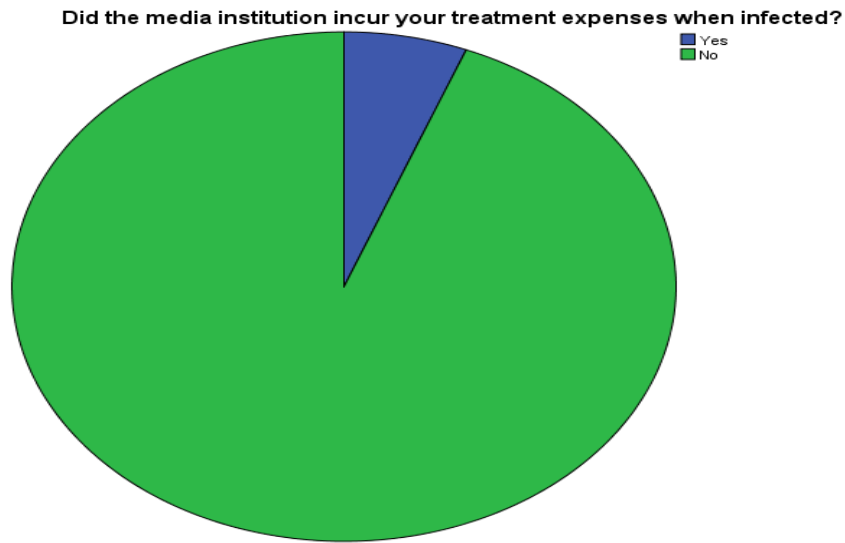


मीडिया संस्थान कोरोना वायरस से जागरूक और उसके बचाव के लिए अभियान चला रहे थे, कि कैसे और किन चीजों को अपना के इस वायरस के बचा जा सकता है, जिसके तहत में बार-बार सैनिटाइजर से हाथ धोने से लेकर, मास्क के लगाने को प्रचारित कर रहे थे और कोरोना से बचाव के लिए वैक्सीन को सर्वाधिक उपयुक्त बता रहे हैं, जिससे उनकी इस प्रतिबद्धता का असर उनके संस्थानों में दिखता है। जिसके तहत 76 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है कि उनके मीडिया संस्थान ने वैक्सीन के कैंप लगवाए, जबकि 24 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया है कि उनके संस्थान ने कोरोना वायरस के बचाव के लिए वैक्सीनेशन कैंप नहीं लगवाए।

➤ क्या कोविड संक्रमित होने पर आपके इलाज का खर्च मीडिया संस्थान ने उठाया ?

**Did the media institution incur your treatment expenses when infected?**

	Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Yes	6	6.0	6.0	6.0
Valid No	94	94.0	94.0	100.0
Total	100	100.0	100.0	

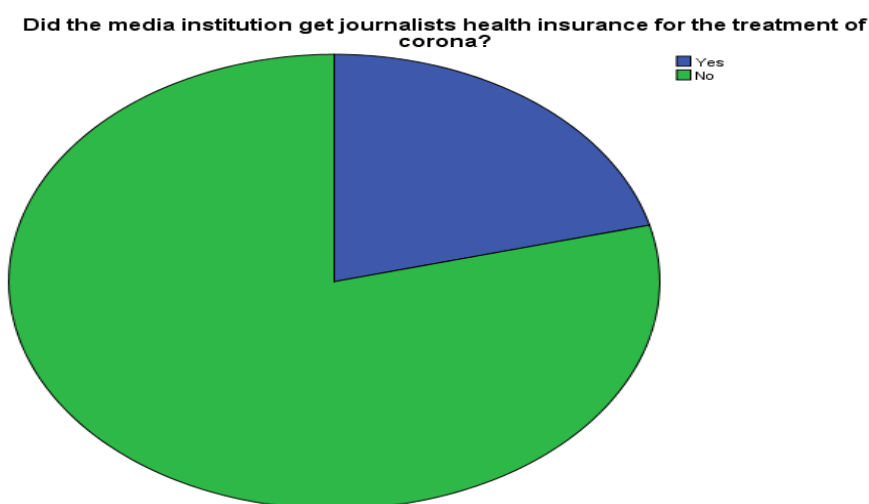


कोरोना वायरस से उपजी महामारी ने संपूर्ण पूंजीवादी व्यवस्था को पैसे कमाने के और असमानता बढ़ाने के विभिन्न अवसर दिए, क्योंकि महामारी के समय लोग आंदोलन, वेतन के लेकर असमतियों जैसे मुद्दे पर रुक जाते हैं। सरकार और व्यवस्था ने उन्हें इससे रोकने के लिए कई प्रतिबंध लगा देती है, जिसका असर इस उत्तर में दिखता है, जिसके तहत केवल 6 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है, कि मीडिया संस्थान संक्रमित होने पर इलाज का खर्च उठाया। जबकि 94 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया है। उनका मानना संक्रमित होने पर उनके इलाज का खर्च मीडिया संस्थान ने नहीं उठाया, ऐसे समय में जब पत्रकार अपने संस्थान के लिए सूचनाओं के लिए ही जान जोखिम में डाल रहा है, मुसीबत आने पर मीडिया संस्थान उनसे किनारा कर ले रहे हैं।

- क्या कोरोना के इलाज के लिए मीडिया संस्थान ने पत्रकारों का स्वास्थ्य बीमा करवाया ?

**Did the media institution get journalists health insurance for the treatment of corona?**

	Frequency	Percent	Valid Percent	Cumulative Percent
Yes	21	21.0	21.0	21.0
Valid No	79	79.0	79.0	100.0
Total	100	100.0	100.0	



महामारी ने संपूर्ण व्यवस्था को एक तरीके से आईना दिखाया है, मीडिया संस्थान भी उसी में शामिल है। मीडिया संस्थान पत्रकारों से काम तो ले रहे हैं, न तो नियमित रूप से मानक के अनुसार वेतन दे रहे हैं, न ही बीमा। इसका एक उदाहरण कोरोना महामारी भी है। पत्रकार संस्थान के लिए और उसके नाम के लिए अपनी जान जोखिम में डालकर खबर ला रहा है, लेकिन संस्थान को इससे कोई मतलब नहीं कि पत्रकारों की मूलभूत सुविधाएं प्राप्त हैं कि नहीं। महामारी के समय स्वास्थ्य बीमा के मामले में 79 फीसदी उत्तरदाताओं ने नहीं उत्तर दिया है कि उन्हें किसी प्रकार का स्वास्थ्य बीमा नहीं कराया गया, जबकि 21 फीसदी उत्तरदाताओं ने हां में उत्तर दिया है, कि उन्हें स्वास्थ्य बीमा करवाया गया।

## निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि कोरोना महामारी का यह खतरा पत्रकारिता और पत्रकारों पर लंबे समय तक रहेगा। कोविड की अनिश्चिता ने पूरी मीडिया इंडस्ट्री को रातों-रात बदल कर रख दिया। जिसके तहत पत्रकारों को एक नई तरह का जीवन और कार्यप्रणाली को अपनाना पड़ा है। जिसमें पत्रकार के व्यक्तिगत जीवन में कई परेशानियों का भी सामना करना पड़ा है। पत्रकारों को नई उपलब्ध पीपीई किट और नए औजारों के साथ किस प्रकार काम करना है, यह अलग चिंता का सबब है, पत्रकार के लिए चुनौती वर्कफार्म होम करते हुए तथ्य एकत्रित करने की और विश्वसनीय सोर्स से सूचना एकत्रित करने की भी है। कोरोना के कारण पत्रकारों को बड़ी चुनौती आनलाइन सूचना की बाढ़ में सही सूचनाओं को जनता तक पहुंचाने की है, जिसमें खासकर आनलाईन में कोई गेटकीपिंग न होने कारण गलत खबर को भी रोका जाना बड़ा मुश्किल काम है। जिसके कारण पत्रकारों की विश्वसनीयता खतरे में आ गई है। पत्रकारों के लिए सरकारी दबाव एक मुद्दा पहले से ही रहा है, महामारी के कारण सरकारों को इसमें और कानून रूपी हथियार मिल गए, जिसके तहत मीडिया की स्वतंत्रता बाधित हो गई, लाकडाउन के समय पत्रकारों को तमाम तरह के प्रतिबंधों से दो-चार होना पड़ा। शोध के विश्लेषण से यह पता चलता है कि सरकार के इतर मीडिया संस्थानों ने पत्रकारों के लिए और मुसीबत खड़ी की। लेकिन इसके उलट शोध में यह भी पता चलता है कि कोरोना के कारण पत्रकारों ने साधन के रूप में सोशल मीडिया का इस्तेमाल अधिक किया है। एक ओर महामारी ने पत्रकारों के लिए रास्ते बंद किए हैं, लेकिन आनलाईन माध्यम ने इसमें आशा की एक किरण भी दिखाई है, नई पत्रकारिता और पत्रकारों के लिए सूचना के साधन के रूप में यह माध्यम उभरकर सामने आए है। कोरोना पत्रकारों के लिए चुनौतियों लेकर आया, लेकिन कई तरीकों के अवसर भी लेकर आया है।

पत्रकार जो कि सूचना के केंद्र का आधार होता है, कोरोना वायरस से उपजी महामारी ने सूचना पर तो आघात किया कि बल्कि इसके उलट उसकी विश्वसनीयता को प्रभावित किया है। कोरोना महामारी का अचानक आना न्यूज रूप और उपकरणों से तेजी से बलना पत्रकारों के लिए बेहद मुश्किल भला कार्य रहा। मीडिया संस्थानों में दशकों से चली आ रही पुरानी कार्यप्रणाली को पूरी तरह बदलना पड़ा। रिपोर्टर जो सूचना के लिए फील्ड रिपोर्टिंग करता था, वह एक तरीके से खत्म हो गई, घुमंतू रिपोर्टर खत्म

हो गए, पत्रकारों को सूचनाओं के लिए सोशल मीडिया और सरकारी वेबसाईट पर निर्भर होना पडा। कोविड के कारण तमाम पत्रकारों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पडा, कई पत्रकारों की कोरोना में जान चली गई। इससे उनके काम की कठिनाई को समझा जा सकता है, किसी भी मीडिया संस्थान ने कोरोना संक्रमित पत्रकार को लगभग न के बराबर आर्थिक सहयोगा किया। लेकिन वही एक ओर संस्थान में पत्रकार संक्रमित न हो जाए, लगभग सभी मीडिया संस्थानों ने पत्रकारों को वर्कफार्म होम की अनुमित दी। विश्लेषण के माध्यम से यह पता चलता है किसी भी संस्थान पत्रकार के संक्रमित होने पर उसके इलाज का खर्च नहीं उठाया है, मीडिया संस्थानों ने संक्रमित पत्रकारों और बीमा की संख्या भी नगण्य है, इससे पत्रकार की विविशता को समझा जा सकता है। पत्रकार जो की चौथे खंभे का आधार होता है, वायरस से उपजी महामारी ने उसे एक अंधकार में ढकेल दिया है, महामारी का फायदा सभी मीडिया संस्थानों ने इस प्रकार उठाया कि पत्रकारों से अंधेरे से निकालने के बजाय एक और बड़ी अंधेरी गुफा में छोड़ दिया है। जबकि सूचना का मूल आधार पत्रकार होता है, पत्रकार जब सुरक्षित नहीं रहेगा, पत्रकारिता के पेशे पर हमेशा अविश्वास के बादल मंडराते रहेंगे।